International Research Journal ISSN-0975-3486 RNI : RAJBIL 01488 VOL. I * ISSUE—2

शोध पत्र- हिन्दी

Oct-Nov—2009

पितृसत्तात्मक समाज और स्त्री का अर्थशास्त्र : 'कल्याणी' उपन्यास के सन्दर्भ में

*डॉ. निर्मला ढैला बोरा

*उपाचार्य, हिन्दी विभाग, डी. एस. बी. परिसर, कुमाऊँ विश्वविद्यालय, नैनीताल

"विवाह से स्त्री पत्नी बनती है। पत्नी याने गृहिणी। पत्नी से पहले स्त्री कुछ नहीं होती, बस वह कन्या होती है। पर मैं कुछ थी, निरा कन्या न थी, डाक्टर थी। अब सवाल है मेरी भाादी और मेरी डॉक्टरी, मेरा पत्नीत्व और मेरा निजत्व, ये परस्पर कैसे निभे"[(1)] 'कैरियर वुमन' की इस घुटती, पिसती, दोहरी जिन्दगी की आहट सबसे पहले जैनेन्द्र के उपन्यास 'कल्याणी में सुनाई पड़ती है। हर युग के सत्य को जीती कल्याणी पत्नीत्व और डाक्टरी के दो पाटों में फँसी एक ऐसी नारी है जो अपने पति द्वारा ही छली गई है, और जिसकी उच्च f ाक्षा पुरुश समाज के अहं का f ाकार बन उसके लिए अभि ााप बन गई है। उपन्यास की पूरी कहानी जैनेन्द्र ने कल्याणी के मित्र (वकील) की जुबानी कहलाई है, जो उसके पड़ोसी हैं। उपन्यास के आरम्भ में ही उसका अन्त निर्दिश्ट करते हुए वे लिखते हैं— "दुनिया दुनिया रहती है। कोई उठ जाता है, तो उसके अभाव में ठहरने का अवका ा उसे नहीं है। उसे खुद अपना चक्कर है। इससे दुनिया में उदास होना गलत है, पर चित्त पूरी तरह बस में जो नहीं होता। वह कभी एकदम बेबस हो जाता है। तब बीती बात याद आ जाती है।"[(2)]

वकील साहब को आ चर्य इस बात का है कि कल्याणी से बेपनाह मुहब्बत करने वाले डॉ0 असरानी उसकी मौत के दो तीन दिन बाद ही अपने पुनर्विवाह की धूमधाम में लग गए तथा कल्याणी को भूल गये। उपन्यास की नायिका कल्याणी डॉ0 है। उसने इंग्लैण्ड से अपनी डॉक्टरी की पढ़ाई पूरी की है और उस दौरान उसके जीवन में एक युवक भी आता है, जिसके साथ वह जीवन के रंगीन सपने देखती है किन्तु सभी के सपने पूरे नहीं होते कल्याणी के सपने भी पूरे नहीं होते लेकिन इन्हीं सपनों को उसका कलंक बनाकर डॉ0 असरानी, जिसके पास कोई डिग्री नहीं थी, कल्याणी से छलपूर्वक विवाह कर लेते हैं, विवाह भी ऐसा मानो उस पर एहसान किया हो। लेकिन डॉ0 असरानी के रवैये के कारण ही न तो कल्याणी डाक्टरी अच्छी तरह निभा पाती है और न गृहस्थी पूरी तरह संभाल पाती है। अतः निरन्तर एक तनाव में रहने लगती है। अपने निबन्ध संग्रह 'प्रेम काम और परिवार' में स्त्री के लिए गृहस्थाश्रम को मुक्ति का द्वार मानते हुए जैनेन्द्र ने लिखा है— "गृहस्थाश्रम कारागार नहीं, बल्कि मुक्ति का द्वार है"[(3)] लेकिन जैनेन्द्र का यह कथन कल्याणी के सन्दर्भ में उचित नहीं ठहरता। अगर हम ध्यान से देखें तो पायेंगे कि कल्याणी की समस्या न तो बाल विवाह की समस्या है और न ही पति—पत्नी के बीच कोई आर्थिक—सामाजिक या उम्र का अंतराल ही है। फिर भी उसका दाम्पत्य जीवन सफल क्यों नहीं हो पाया? गृहस्थाश्रम उसके लिए मुक्ति का द्वार न बनकर कारागार क्यों बन गया? यह ऐसे प्र न हैं जो कल्याणी के जीवन की त्रासदी बन गये हैं। कल्याणी के लिए विवाह विवाह न रहकर बोझ बन जाता है 'अपने अन्तर्गत की व्यवस्था को व्यक्त करते हुए वह कहती है— "देखिए न, कितना बोझ है, कितना बोझ?

सिर का बोझ संभल भी जाय, पर मन का यह बोझ कब तक सहा जा सकता है? और मैं किसी से उस मन को खोल नहीं सकती। परदे ा है, यहाँ कौन अपना है? और अपने दे ा में भी तो अब मैं विरानी हूँ, अंग्रेजी पढ़ी हूँ। विलायत गई हूँ। यहाँ की नहीं वहाँ की नहीं।"[(4)] असरानी दम्पति आर्थिक दृश्टि से सम्पन्न हैं। बाहर से देखने पर सब कुछ सामान्य और सुखद है, लेकिन जाने ऐसी कौन सी असंगति है कि दोनों पति—पत्नी के बीच स्नेह का सूत्र चाहकर भी नहीं बँध पाता, और यही कल्याणी के जीवन की त्रासदी है। सामान्यतया पुरुश पर आर्थिक निर्भरता नारी की पराधीनता के मूल में मानी जाती है, लेकिन कल्याणी की आत्मनिर्भरता एवं उसकी उच्च f ाक्षा ही उसके दुःख का कारण है। डॉ0 विजय मोहन सिंह के भाब्दों में— "जैनेन्द्र जी के लिए स्त्री की आर्थिक मुक्ति समस्या का समाधान नहीं समस्या की भाुरूआत है। इस आर्थिक मुक्ति ने स्त्री को नये प्रकार के सामाजिक तथा आर्थिक द्वन्द्वों में उलझा दिया है"[(5)] आर्थिक स्वातन्त्र्य मिलने पर स्त्री की जीवन दृश्टि में बदलाव आना स्वाभाविक है और यही बदलाव 'कल्याणी'

उपन्यास के केन्द्र में है जो डॉ0 असरानी की धनलोलुप और संकीर्ण मानसिकता को स्वीकार नहीं है क्योंकि वह अपने भीतर के परम्परागत पुरुश का अधिकार भी सुरक्षित रखना चाहता है और कल्याणी की आर्थिक क्षमता का उपयोग भी करना चाहता है। असरानी पत्नी से प्रेम नहीं करता बल्कि वह उसके पैसे के प्रति आकर्शित है। वह कभी कल्याणी के प्रति अत्यधिक प्रेम जतलाता है और कभी उसका खूब अपमान करता है। कल्याणी जानती है कि उसके पति का प्रेम उसके पे ो से आने वाले धन से है और अपमान उसका अपना है। इस दोहरे बरताव से त्रस्त कल्याणी मनोवैज्ञानिक विभ्रम का ि ाकार हो जाती है। इस भ्रम के फलस्वरूप उसे लगता है कि उसके गुसलखाने में किसी स्त्री की हत्या की गई है, वह कहती है– ''मैं किसी का अनिश्ट नहीं चाहती। हमारे घर के गुसलखाने में एक युवती की हत्या की गई है.......... मैंने खुद देखा उसे गला घोंटकर मारा गया था........... कोई एक महीने से गुसलखाने से सिसकी की आवाज सुन पड़ती थी................. जैसे कोई मुँह दाब कर रोता है''[(6)] कल्याणी पति के दुर्व्यवहार से, उसकी मानसिक प्रताड़णा से घुट–घुट कर मृत्यु की ओर बढ़ती जाती है, उसकी वेदना इतनी घनीभूत है कि अपनी मृत्यु को वह खुली आँखों से उस युवती की काल्पनिक मृत्यु के रूप में देखने लगती है और अन्ततः आत्मघाती निर्णय में परिणिति पाती है। वह जानती है कि वह निर्दोश है, किन्तु दोश को अपने ऊपर लेकर स्वयं को पीड़ा पहुँचाती रहती है। कभी वह सुबह उठकर ठंडे पानी से नहाती कभी व्रत रख लेती और कभी बिना खाये देर तक मरीजों को देखती। डॉ0 असरानी उसकी इस स्थिति के विशय में बड़ी मासूमियत से कल्याणी के प्रति फिक्रमंदी का दिखावा करते हुए वकील साहब से कहता है– ''मेहनत का यह हाल है कि ठीक सात बजे अस्पताल में आ जाती है। आराम जरा नहीं लेती, न किसी को लेने देती हैं। कहती हैं सूरज आसमान में आराम लेता? ई वर के राज्य में किसी को आराम है? सो दिन में विश्राम का नाम नहीं। हफ्ते में अगर दो नहीं तो एक उपवास तो होता ही है। आज एकाद ी है, तो कल पंचमी है''[(7)]

लेकिन कल्याणी के इस आत्मपीड़न के लिए जिम्मेदार कौन है?– प्रेम का नाटक करने वाला उसका पति डॉ0 असरानी। अपने धूर्त पति के इस नकाब को उघाड़ते हुए कल्याणी चींखकर जो कुछ भी कहती हैं उससे सारी स्थिति स्पश्ट हो जाती है– ''तुम साफ–साफ कह क्यों नहीं देते कि तुम क्या चाहते हो? मुझे तिल–तिल कर बेचना चाहते हो– सो वह हो तो रहा है। आखिरी सांस तक मेरा बिक जाएगा। तब मैं इंकार नहीं करूँगी। लेकिन इसके बाद तुम मुझे अपनी तरह रहने क्यों नहीं देते?''[(8)] डॉ0 रामरतन भटनागर के भाब्दों में– ''डॉ0 असरानी के रूप में महाजनी समाज के उच्च ि ाक्षिता नारी के भोशण का जो चित्र प्रस्तुत किया है, वह पतित होने के साथ भयावह भी है। जहाँ मूल में ही कुत्सा है वहाँ दाम्पत्य कब है? 'कल्याणी' पति की संस्था पर तीव्र व्यंग्य है। जहाँ दाम्पत्य पत्नी के भोशण पर खड़ा है वहाँ बाहर से उसे तोड़ने की आव यकता ही नहीं''[(9)] जैनेन्द्र स्त्री और पुरुश के बीच एकता के अभाव में परिवार की तबाही को निर्दिश्ट करते हुए कहते हैं– ''भीतर–बाहर ये भाब्द में दो हैं, पर यों दो नहीं हैं। प्रकृति में एक ही हैं। दो होकर भी एक, जैसे ओर और छोर। और जहाँ ऐसा नहीं है, जहाँ उसमें सचमुच विरोध पड़ा है, वहीं क्ले ा है। इस तरह क्लेश मानवीय सृश्टि है। यथार्थ में यह नहीं है। तभी तो जगत् का नाम द्वन्द्व है, द्वन्द्व के माने हैं– दोनों के बीच का अनिर्वाह। यह दोनों के बीच एकता का अभाव ही हमारी समस्या है''[(10)]

ज्योतिश जो ी का मानना है कि 'कल्याणी' उपन्यास पति–पत्नी के बीच समुचित सहकार पर बल देता है। उनके अनुसार डॉक्टर असरानी भाुद्ध भौतिक संसाधनों के प्रति लोभी व्यक्ति हैं और डॉक्टर कल्याणी अपने पति से तालमेल बिठाने में असमर्थ हैं। वह अपनी स्वाधीनता में भागती जाती है और यह नहीं देखती कि अपने घर से वह टूट रही है कि जुड़ रही है– ''स्त्री स्वाधीनता में परिवार के दायित्व के प्रति यही अनुत्तदायित्व बोध कटुता और ऐसे वैमनस्य में तब्दील हो जाता है, जिसमें कल्याणी का सिर्फ टूटना ही रह जाता है– वह न डॉ0 असरानी के प्रति वि वस्त रह पाती है और न असरानी ही उसके प्रति उत्तरदायी रह पाता है। स्त्री–स्वाधीनता में आये ऐसे अवि वास इन्हीं हालातों को जन्म दे सकते हैं। जैनेन्द्र यहाँ यही कहना चाहते हैं। यह पारिवारिक जीवन में आये अवि वास का एक स्तर है। जहाँ स्त्री–स्वाधीनता जीवन समाप्ति का कारण बनही है।''[(11)] कल्याणी के सन्दर्भ में ज्योतिश जो ी का उपर्युक्त कथन सवाल खड़ा करता है कि कल्याणी ने स्वाधीनता कब चाही? उसने कुछ चाहा तो सिर्फ टुकड़ों में बँटकर जीना नहीं चाहा। वह स्पश्ट भाब्दों में अपने पति डॉ0 असरानी से कहती हैं– ''दोनों में से कोई एक चुनकर मुझे दे दो। पतिव्रत या डॉक्टरी। मैं पति में परायण हो जाऊँ या डॉक्टरी की कमाई करके दूँ। दोनो साथ कठिन हैं। पैर दो नावों पर रहेंगे तो हालत डगमग रहेगी और जो मेरी ही चुनने की बात है तो मैं कहूँगी डाक्टर मैं नहीं बनना चाहती, पर अगर तुम्हें डॉक्टरी का आमदनी भी चाहिए, उसके बिना नहीं चलता हो तो पतिव्रत की माँग उतनी कड़ी नहीं रखी जा सकेगी, थोड़ा उसे उदार करना होगा लेकिन यह सब क्यों, मुझे डाक्टरी नहीं करनी..........''[(12)] प्र न उठता है कि जैनेन्द्र की दृश्टि में पतिव्रता की परिभाशा क्या है? डॉ0 राधाकृश्णन ने 'रिलीजन एण्ड सोसाइटी' में 'पतिव्रता भाब्द को परिभाशित करते हुए लिखा है– ''वह पत्नी जो पति

के प्रति मानसिक रूप से एकाग्र हो और उसके साथ छाया की तरह रहे, जो पति के प्रत्येक भुभ काम में भागीदार हो और गृहस्थी के दायित्व में दक्ष तथा सदैव प्रसन्न रहे।''[13] पतिव्रता के यह गुण ऋग्वेद में भी व्याख्यायित हैं कि वह पति की आजीवन मित्र हैं। जैनेन्द्रीय दृश्टिकोण में भी पतिव्रता की यही परिभाशा है। वैदिक मान्यता कि, पतिव्रता स्त्री के लिए पति से जिन आजीवन मित्रता और सहकार की आव यकता बताई गई है, जैनेन्द्र ने उसे स्वीकार करते हुए अपने निबन्ध संग्रह 'नारी' में लिखा है– ''स्त्रीत्व और पौरूश का जीवित समन्वय आद र्श रूप है। वहाँ होगी व्यक्तित्व की पूर्णता सभी गुण जहाँ पूर्णता को प्राप्त होते हैं। भौर्य भी और मार्दव भी, तेज भी और आर्जव भी– वह निगुर्णता की स्थिति सिद्ध है।''[14] इस सन्दर्भ में नैतिकता अनैतिकता पर विचार करते हुए जैनेन्द्र लिखते हैं– ''समाज की अपेक्षा से ही नैतिकता अनैतिकता की सृश्टि होती है। मानव जाति के विविध समूह समाजों की भिन्न–भिन्न रीति नीति होने के कारण नैतिक अनैतिक ठहराने का अधिकार मेरा नहीं है।

ऊपर यदि अनैतिक भाब्द आया है, तो पारिवारिक नैतिकता को केन्द्र में लेकर। हो सकता है, प्रयोग पूर्वक मानव समाज ऐसी जगह पहुँचे, जहाँ उसकी नैतिकता की धारणा परिवार केन्द्रित न रह जाए। लेकिन आज पि चम के जिन दे ों की चर्चा है, वे अपने तंत्र में विवाह और परिवार को मान्य ठहराते हैं, इसीलिए विवाह से बाहर लैंगिक सम्बन्ध अनैतिक ठहरते हैं''[15] अर्थात निश्कर्श यह कि पतिव्रता पति के अतिरिक्त किसी और के प्रति यौनाकर्शित न हो और पति के प्रति समर्पण भाव रखे। उनकी पतिव्रता किसी को देखने, बात करने या घर से बाहर निकलने में अनैतिक नहीं हो जाती। पतिव्रता भाब्द को अपने ढंग से परिभाशित करती हुई जैनेन्द्र के उपन्यास 'कल्याणी' की नायिका कहती है– ''अच्छी बात है, मैं डाक्टरनी बनती हूँ, लेकिन तब समझ लीजिए कि मैं हर किसी से मिलूँगी। अच्छे से तो, बुरे से तो। तब आप मुझ पर भरोसा न भी रखें तो भी मुझे रोका नहीं जाएगा।''[16] जैनेन्द्र का यही दृश्टिकोण पतिव्रता की नई धारणा नई नैतिकता को प्रति ठत करता है अतः विजयमोहन सिंह लिखते हैं– ''यहीं जैनेन्द्र जी की नई नारी और नई नैतिकता प्रेमचन्द से आगे भी है या उसके समानान्तर भी, अथवा स्वयं एक ग्रन्थी बनती हुई।''[17] कल्याणी का यही पातिव्रत्य धर्म डाक्टरी के साथ निभना मु कल हो जाता है क्योंकि असरानी एक ओर कल्याणी को आद र्श गृहिणी के रूप में देखना चाहते हैं। स्वयं ही कल्याणी को घर से बाहर निकालते हैं और फिर खुद ही डॉ0 भटनागर के घर पहुँचकर दोनों पर कीचड़ उछालते हुए कहते हैं– ''मेरी स्त्री को तुम उड़ाकर ले आए हो। लाओ निकाल कर दो............... मेरी बीबी को तुम उड़ा लाए हो। बताओ कहाँ है।.................. मैं सब चालाकी समझता हूँ। अभी घर की तला ी लूँगा।''[18] असरानी के इस व्यवहार से परे ान कल्याणी जब डाक्टरी छोड़कर घर बैठ जाती है और डॉक्टरी से आने वाला पैसा बन्द हो जाता है तो असरानी पुनः उससे क्षमा याचना कर उसे अस्पातल बैठने पर मजबूर कर देता है। हिसाब किताब कल्याणी के हाथ में आ जाने पर उसे छोड़कर चला जाता है और जाते जाते कहता है– ''तुम साल में जितना करोगी, देखना मैं एक दाँव में उससे कई गुना कमा कर दिखा सकता हूँ।''[19] लेकिन सब कुछ लुटाकर वापस घर आ जाता है। यही नहीं जब कल्याणी किसी मरीज को देखने के कारण असरानी द्वारा आयोजित सम्मेलन में सम्मान पत्र लेने नहीं पहुँच पाती है तो उसे ताँगे से खींचकर जूतों से मारता है। चारों ओर तमा े को देखने भीड़ एकत्र हो जाती है।

सरेआम उसे अपमानित करने के बावजूद अगले दिन ही उसकी डाक्टरी से आने वाले पैसे का ख्याल कर उसकी जी हजूरी और चापलूसी करने लगता है। असरानी के इस आचरण पर टिप्पणी करते हुए डॉ0 राणा लिखते हैं– ''निर्मम असरानी धूर्त पति, कपटि मित्र और स्वार्थी सहचर है। वह असामान्य और पीड़क रूप में प्रस्तुत होता है। स्वार्थ के व ीभूत होकर वह भावना भून्य बन जाता है।''[20] अतः डाक्टर असरानी का धनलोलुप और स्वार्थी चरित्र ही वह कारक है जो कल्याणी को अपने पतिव्रता धर्म और डाक्टरी पे े में सामन्जस्य नहीं बिठाने देता। कल्याणी भारतीय संस्कृति में अपने को मिला देने की पूरी कोि ा भी करती है, फिर भी डा0 असरानी की भांकालु प्रवृत्ति से बच नहीं पाती है। असरानी की यह दुश्प्रवृत्ति कल्याणी में एक विद्रोहिणी को जन्म देती है। डॉ0 बान्दिवाडेकर के भाब्दों में– ''पति के प्रति कहीं गहरी असंपृक्ति नफरत उसमें है और परम्परागत भारतीय नारी के पतिनिश्ठा के संस्कार भी उसके मन में निः ोश नहीं हुए हैं। एक विचित्र जिद और विरोध उसे व्यक्तित्व में पैदा हुआ है जो पूरे व्यवहार में झलकता है।''[21] आधुनिक नारी की इसी त्रासदी को जैनेन्द्र ने 'कल्याणी' में स्वर दिया है। जैनेन्द्र कुमार ने स्त्री को आजाद नहीं किया। मुक्ति नहीं दी। समाज सुधार जैनेन्द्र के उपन्यासों और कहानियों का अभीश्ट कभी नहीं रहा, लेकिन उन्होंने स्त्री को समाज के सामने उसकी विभीशिका के साथ पे ा किया, पहचाना। यही वजह है कि आज भी हजारों–लाखों स्त्रियाँ अपने आपको आइडेन्टिफाई करती हैं, 'मृणाल' के साथ, जैनेन्द्र कुमार के उपन्यासों की स्त्रियों के साथ, नायिकाओं के साथ।''[22] स्पश्ट है कि 'कल्याणी' स्त्री मुक्ति की कहानी नहीं है, वरन् उस समस्या की कहानी है जिससे आज भी महिला लेखिकाओं द्वारा लिखी गई कृतियाँ जूझ रही हैं। मैत्रेयी पुश्पा का उपन्यास 'विजन' भी 'कल्याणी'

की ही तरह कैरियर वुमन की त्रासदी कहता दिखाई देता है। 'विजन' के माध्यम से मैत्रेयी पुश्पा जैनेन्द्र के उपन्यास 'कल्याणी' की ही भाँति इस सर्वस्वीकृत मान्यता को प्र नों के घेरे में खड़ा करती हैं कि उच्च ि क्षा व आर्थिक स्वावलम्बन स्त्री–मुक्ति को सुनि चत करता है। पितृसत्तात्मक समाज में किस ाड्यन्त्रकारी ढंग से स्त्री की ि ाक्षा–दीक्षा को भी अपनी हित रक्षा के साधन के रूप में तब्दील कर दिया जाता है, यह तथ्य जितनी बेबाकी से जैनेन्द्र ने 'कल्याणी' में उजागर किया है, उतनी ही बेबाकी से मैत्रेयी पुश्पा ने 'विजन' में। 'विजन' की नेहा की यह त्रासदी है कि सर्जरी की दक्षता के बावजूद आई सैन्टर में उसे सर्जरी के काम से दूर रखने हेतु ओ0पी0डी0 व रिसै ान की जिम्मेदारी उसके ससुर डा0 भारण द्वारा यह कह कर सौंप दी जाती है कि– ''तुम्हारी देख–रेख में इस आई सैन्टर की कितनी सुरक्षा रहेगी, यह तो मैं ही अनुमान लगा सकता हूँ। उसके विकास की दूरदृश्टि भी तुम्हारे पास है, मैं पूरी तरह समझ चुका हूँ।

यहाँ की जरूरतों की परख, रोगियों के लिए माफिक और गैर–माफिक माहौल की परख, दर्दमंदों के लिए संवेदन ीलता की जरूरत, इलाज के लिए कारगर विधियों का लेखा जोखा और ब्यौरे तुम्हारी हदों में होंगे। तुम फ्लोरेंस नाइटेंगल बनो। मदर टैरेसा जैसी ममतामयी।''[23] लेकिन जब इसी आई सेन्टर में उसके पति डाक्टर अजय की अयोग्यता के कारण एक मरीज की सर्जरी के दौरान मौत हो जाती है तब अजय मरीज की मृत्यु की घोशणा की जिम्मेदारी उस पर डालते हुए कहता है– ''नेहा डिक्लेयर द डैथ, नेहा टेक एडवांटेज ऑफ युअर वुमेनहुड''[24] इसी वुमनहुड को दूसरे तरीके से डा0 असरानी भी उपयोग में लाता है। वह कल्याणी के विवाह पूर्व प्रेम को माध्यम बना कर भारत आने वाले प्रीमियर के माध्यम से लाखों का लाभ उठाना चाहता है। इसीलिए प्रीमियर के स्वागत की जोरदार तैयारी देखकर कल्याणी का हृदय चीत्कार कर उठता है। वह वकील साहब से कहती है– ''अगर मेरे पति अपना मतलब मेरे उपलक्ष्य से प्रीमियर द्वारा साध सकें तो उन दोनों ही के लिए मुझे क्या प्रायि चत करना होगा यही मुझे सोच है।''[25] कल्याणी की ही भाँति डा0 नेहा भी मरीज की मौत पर प्रायि चत करते हुए कहती है– ''इस भव्य इमारत में चल रहे नेत्र चिकित्सालय के नौजवान डा0 अजय को ब्लॉक तक देना नहीं आया, जो सर्जरी का पहला स्टैप है। इस अस्पताल के उसी वारिस से भूल हुई और मौत हो गई। मैं डॉ0 नेहा भारण उसकी अनफौर्च्युनेट (अभागिन) पत्नी अपने पति के लिए क्षमा माँगती हूँ और मृतक की आत्मा के लिए भान्ति की कामना करती हूँ।''[26] कल्याणी के मनोविभ्रमों, आत्मपीड़न और उसकी मृत्यु का जिम्मेदार उसका पति है तो नेहा को मनोरोगी होने की कगार में धकेलने वाले उसके ससुर और पति हैं। अपने अयोग्य पति के आई सैन्टर के रिसै ान और ओ0पी0डी0 को संभालने वाली नेहा की यह प्रार्थना– ''भगवान वर दो, भाक्ति दो, सहिश्णुता दो और साथ ही विस्मृति दो.......... मैं अपना डाक्टर होना भूल जाऊँ। जो काम दिया गया है करती रहूँ। मुझे कभी ऐसा सपना न आए जिसमें किसी मरीज से सामना हो''[27] और यह प्र न कि– ''अपने जीवन में मैं कहाँ हूँ?''[28] उसी प्रकार अनुत्तरित है जिस प्रकार डिग्रीविहीन पति की पत्नी कल्याणी की यह व्यथा अनुत्तरित है– ''अपने भाग्य को दुर्भाग्य बनाने वाली क्या मैं ही नहीं हूँ? मैं तो अपने से ही नाराज हूँ। सोचती हूँ कि मैंने अपना क्या कर डाला।''[29]

नेहा के विपरीत 'विजन' की डाक्टर आभा को अपने डाक्टरी के पे ो को बचाए रखने के लिए विवाह विच्छेद का निर्णय लेना पड़ता है। उसका पति मुकुल स्वयं भी एक डाक्टर है लेकिन पत्नी के पे ो के प्रति उसका नजरिया उसके इस कथन से स्पश्ट हो जाता है– ''आभा मैं तुम्हारी ड्यूटीज समझता हूँ, लेकिन डाक्टर होने के नाते यह भी जानता हूँ कि आप्थल्मालॉजी में इमरजैन्सी का मतलब क्या होता है। ये इमरजैंसीज कार्डियों और न्यूरो (हृदय और मस्तिश्क) विभागों की जैसी आपातकालीन ड्यूटीज की माँग नहीं करती। तुम इन्हें इतनी सीरियसली क्यों लेती हो ?............. फिर तुम एक लेडी, जिसकी जरूरत उसे घर को भी उतनी हो होती, जितनी अस्पताल को। बुरा न मानना, अब तुम एक भाादी– ुदा औरत हो। मैरिड वुमन''[30] ससुराल व नौकरी के बीच तालमेल ठीक से न बिठा पाने की सजा आभा को खूब मिलती है कभी गालियों के रूप में तो कभी थप्पड़ों के रूप में। अन्त में परिणाम होता है विवाह विच्छेद– ''मुकुल आई वांट डायवोर्स। आई वांट डायवोर्स। आई वांट डायवोर्स।.......... मुकुल किसी को हक नहीं कि दूसरे को ऐसा सदमा दे कि उसका संतुलन बिगड़ने लगे। उसे आघात का कारण क्या था?........... जो भी था मैं उस मारपीट वाले काण्ड को भूल नहीं पाती, जो मेरे पिता की आँखों के आगे घटकर ज्यादा से ज्यादा बड़े अपमान में बदल गया था।........... तुम कह सकते हो, हमारे मुल्क में पति अपनी पत्नी को पीट देता है तो नया क्या है? मानती हूँ, तमाम स्त्रियाँ मार खाते–खाते जीवन यापन करती रहती हैं, मगर मुकुल न तो तुम उन पतियों जैसे जाहिल थे, न मैं ही उन पत्नियों जैसी लाचार.........मैं तुम्हारे उस खूँखार पौरूश को नहीं झेल पाई।''[31] पुरुश प्रधान समाज में कैरियर वुमन बनना एक चुनौती है इस तथ्य को 'कल्याणी' उपन्यास की कल्याणी भी समझती है जो पति से अपनी प्र ांसा इन भाब्दों में सुनती है– ''तुम समझती हो तुम कमाती हो? लेकिन तुम आज मुँह भी उठा सकती हो तो मेरी बदौलत। अपनी डिगरी और काबलियत का गर्व न करना। मैं न होता तो तुम्हें जीने का ठौर न था।''[32] और 'विजन' की

आभा भी जो डॉ0 चोपड़ा के व्यंग्य बाणों का ि ाकार होती हैं– ''डॉक्टर आभा इज मैडा ाी इज़ सिनिकल........ फ्रस्टेटेड वुमन। साली ने पति को क्या छोड़ा पुरुशों की दु मन हो गई। आई फैमिनिज़्म की नानी''[33] मैत्रेयी ने पित्रसत्तात्मक समाज में जिस स्त्री व्यक्तित्व की रचना की है, ''वह भारतीय पारम्परिक समाज में अपनी अस्मिता की तला ा करती उस स्त्री संघर्श की गाथा है जिसे उच्च–ि ाक्षा और अच्छे कैरियर के बावजूद अभी भी स्त्री नियति से मुक्त होना है''[34] स्त्री होने की विडम्बना कल्याणी को भी है– ''स्त्री निर्दोश हो सकती है? पहला दोश तो यही है कि वह स्त्री है''[35] लेकिन कल्याणी की विडम्बना 'विजन' उपन्यास की आभा से भिन्न इस स्तर पर है कि वह डॉ0 असरानी से सम्बन्ध विच्छेद नहीं करती।

वह कभी समझौता करती है, कभी विद्रोह करती है और कभी अपने निजत्व को मिटाकर पत्नीत्व का निर्वाह करते हुए भी अपमान और तिरस्कार झेलती है। डॉ0 सत्येन्द्र के भाब्दों में– ''कल्याणी एक विद्रोहिणी नारी के रूप में कैरियरिज़्म के स्तर पर अपना निजत्व मिटाकर पति तुश्टि की चेश्टा में अपना पतिव्रत निर्वाह करते हुए निरा ाा, वितृश्णा, कुण्ठा, अपमान और अतृप्ति भोगती है।''[36] भारतीय समाज में आज भी न जाने कितनी कल्याणियाँ, आभाएं व नेहाएं हैं जो कैरियर और गृहस्थी दोनों कसौटियों पर अपने को प्रूव करने की जद्दोजहद में लगी हैं, इनमें से कुछ नेहा की तरह मनोविकार ग्रस्त हो जाती हैं, कुछ आभा की तरह तलाक का दं ा झेलती है और कुछ कल्याणी की तरह अधर में लटक कर मृत्यु को प्राप्त होती हैं। कल्याणी तलाक का निर्णय क्यों नहीं ले पाती? कारण– डॉ0 असरानी का चरित्र वह व्यक्ति कहीं से भी कैसा भी वार कर सकता है। वह अगर कल्याणी के साथ घर में मारपीट कर सकता है तो बाजार में भी उसकी पिटाई करने में हिचकता, फिर दूसरे ही क्षण उसकी चापलूसी भी कर सकता है। वह ऐसे पुरुश का प्रतिनिधित्व करता है जो पत्नी के पैसे पर ऐ ा भी करता है और उसे जतला भी सकता है कि उसका पैसा कोई मायने नहीं रखता और यदि वह चाहे तो दुगना पैसा कमा सकता है। डॉ0 असरानी के चरित्र की यह अवसरवादी प्रवृत्ति कल्याणी को कोई नि ि चत निर्णय नहीं लेने देती। डॉ0 मधुरे ा कहते हैं– ''कल्याणी के चरित्र में एक अमेद्य मौन और पठारी प्रतिरोधहीनता है। वह पे ो से डॉक्टर हैं। विदे ा की डिग्री उसके पास है। लेकिन फिर भी पति के भोशण और अत्याचारों के विरूद्ध उसमें कहीं कोई चेतना नहीं है। कल्याणी सनातन सतीत्व की बात करती है। एक संस्था के रूप में विवाह को अनिवार्य मानती है और पति–पत्नी के बीच दासता जैसी चीज को अस्वीकार करती है। अपने अमूर्त और अस्पश्ट चिंतन के कारण व किसी भी स्तर पर एक आधुनिक और आत्म सजग स्त्री का प्रतिनिधित्व नहीं करती।''[37]

लेकिन असरानी के चरित्र का वि लेशण करने पर कल्याणी की प्रतिरोधहीनता का कारण बिल्कुल स्पश्ट होकर सामने आ जाता है। असरानी उस वि ौले सर्प के समान है जो अपने जहरीले दं ा से व्यक्ति की चेतना को निश्क्रिय कर देता है और चेतना के निश्क्रिय हो जाने पर क्या विरोध सम्भव है? और चेतना की निश्क्रियता ही कल्याणी के अमेद्य मौन और पठारी प्रतिरोधहीनता का कारण है। भायद जैनेन्द्र की भी अपने उपन्यास की अधिकां ा नायिकाओं से यही अपेक्षा रहती है। जैनेन्द्र का उद्दे य अपनी नायिकाओं के त्याग और उनकी सहिश्णुता द्वारा उनके प्रति पाठकों की सहानुभूति उपजाने का होता है, क्योंकि ''यह व्यापक सहानुभूति ही उनके प्रति होने वाले अन्याय की क्षतिपूर्ति कर सकता है''[38] इसके अतिरिक्त जैनेन्द्र की स्त्री सम्बन्धी अवधारणा में नारी का आर्थिक स्वावलम्बन ही उसके गृहस्थ्य जीवन के विघटन का कारण है। उनकी दृश्टि में स्त्री के लिए आर्थिक स्वावलम्बन उतना ही महत्वपूर्ण नहीं है जितना उसका गाहर्स्थ्य। उनका मानना है– ''आर्थिक जैसी किसी स्वतन्त्रता में वह अपने को सार्थक नहीं पा सकती। गृहिणी धर्म में ही उसकी समुचित परितृप्ति है।''[39]

सन्दर्भ ग्रन्थ

1. जैनेन्द्र कुमार, कल्याणी, पृ0– 43 2. जैनेन्द्र कुमार, कल्याणी, पृ0– 7 3. जैनेन्द्र कुमार, काम, प्रेम और परिवार, पृ0– 85 4. जैनेन्द्र कुमार, कल्याणी, पृ0 5. सं0 अ ाोक वाजपेयी, जैनेन्द्र की आवाज, ले0–विजयमोहन सिंह, पृ0– 107 'नई नारी नई नैतिकता'। 6. जैनेन्द्र कुमार, कल्याणी, पृ0– 90 7. जैनेन्द्र कुमार, कल्याणी, पृ0– 55–56 8. जैनेन्द्र कुमार, कल्याणी, पृ0– 56 9. डॉ0 रामरतन भटनागर, जैनेन्द्र व्यक्ति, कथाकार और चिन्तक, पृ0– 61 10. जैनेन्द्र कुमार, कल्याणी, पृ0– 110 11. ज्योति ा जो ाी, जैनेन्द्र और नैतिकता, पृ0– 92 12. जैनेन्द्र कुमार, कल्याणी, पृ0– 44 13. डॉ0 राधाकृश्णन, रिलीजन एण्ड सोसाइटी, जॉर्ज एलन एण्ड अनवीन लिमिटेड, लंदन, पृ0– 153 14. जैनेन्द्र कुमार, नारी, पृ0– 19 15. जैनेन्द्र कुमार, नारी, पृ0– 35 16. जैनेन्द्र कुमार, कल्याणी, पृ0– 43 17. सं0 अ ाोक वाजपेयी, जैनेन्द्र की आवाज, ले0– विजयमोहन सिंह, 'नई नारी नई नैतिकता', पृ0– 103 18. जैनेन्द्र कुमार, कल्याणी, पृ0– 39–40 19. जैनेन्द्र कुमार, कल्याणी, पृ0– 20. डॉ0 बलराज सिंह राणा, उपन्यासकार जैनेन्द्र के पात्रों का मनोवैज्ञानिक अध्ययन, पृ0– 122 21. डॉ0 चन्द्रकान्त बांदिवाडेकर, जैनेन्द्र के उपन्यास, मर्म की तला ा, पृ0– 34 22. सं0 अ ाोक वाजपेयी, जैनेन्द्र की आवाज, ले0– श्रीकान्त वर्मा, पृ0– 40 23. मैत्रेयी पुश्पा, विजन, पृ0– 18 24. मैत्रेयी पुश्पा, विजन, पृ0– 207 25. जैनेन्द्र कुमार, कल्याणी, पृ0– 149 26. मैत्रेयी पुश्पा, विजन, पृ0– 209 27. मैत्रेयी पुश्पा, विजन, पृ0– 51 28. मैत्रेयी पुश्पा, विजन, पृ0– 14 29. जैनेन्द्र कुमार, कल्याणी, पृ0– 26 30. मैत्रेयी पुश्पा, विजन, पृ0– 98–99 31. मैत्रेयी पुश्पा, विजन, पृ0– 119 32. जैनेन्द्र कुमार, कल्याणी, पृ0– 87 33. मैत्रेयी पुश्पा, विजन, पृ0– 154 34. सं0 नामवर सिंह, आलोचना, अक्टूबर–दिसम्बर, जनवरी–मार्च, 2001–02 ले0 वीरेन्द्र यादव– 'नारी का उपन्यास बनाम उपन्यास की नारी, पृ0– 27 35. जैनेन्द्र कुमार, कल्याणी, पृ0– 25 36. डॉ0 सत्येन्द्र, सुखदा उपन्यास की विवेचना, पृ0– 18 37. मधुरे ा, हिन्दी उपन्यास; सार्थक की पहचान, पृ0 102 38. मधुरे ा, हिन्दी उपन्यास; सार्थक की पहचान, पृ0 102 39. जैनेन्द्र कुमार, काम, प्रेम और परिवार, पृ0– 9